गुरोरष्टकम्

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित स्तुति

श्लोक १

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं

यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

भले ही मनुष्य का शरीर सुन्दर हो और उसकी पत्नी रूपवती हो;
उसके पास यश, प्रेम, श्रेष्ठ गुण हों और उसकी सम्पत्ति मेरु पर्वत के बराबर हो
[कहा जाता है कि मेरु पर्वत विशुद्ध सोने का बना है],
परन्तु यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या? [अर्थात् इन सबका क्या प्रयोजन?]

श्लोक २

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं

गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम् ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

भले ही मनुष्य के पास
पत्नी, धन-सम्पदा, पुत्र-पौत्र आदि, घर, बन्धु-बान्धव—ये सब हों,
परन्तु यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

श्लोक ३

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या

कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

भले ही मनुष्य को वेद और उनके छः अंग, शास्त्रों की विद्या आदि कण्ठस्थ हों;
उसमें कवित्व आदि की साहित्यिक प्रतिभा हो और
वह सुन्दर गद्य व पद्य की रचना करता हो,
परन्तु यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

श्लोक ४

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः

सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

भले ही मनुष्य अभिमान के साथ कहे,
"विदेशों में मेरा मान-सम्मान है, अपने देश में भी मैं धन्य समझा जाता हूँ और
सदाचार में मुझसे बढ़कर कोई नहीं है,"
परन्तु यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

श्लोक ५

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः

सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

भले ही सम्पूर्ण भूमण्डल के राजा-महाराजागण सदैव एक मनुष्य का सम्मान करते हों,
परन्तु यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

श्लोक ६

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्

जगद्वस्तु सर्वं करे मत्प्रसादात् ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

भले ही मनुष्य अभिमानपूर्वक कहे,
“मेरी उदारता और मेरे दान के प्रताप से ही मेरा यश सभी दिशाओं में फैल गया है;
जगत की सारी धन-सम्पदा मेरी अपनी ही कृपा से मुझे हस्तगत है,”
परन्तु यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

श्लोक ७

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ

न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

मन भले ही न भोगों के विषय में, न योग के विषय में सोचता हो;
न ही घोड़ों आदि की भौतिक सम्पत्ति के विषय में और
न ही अपनी प्रिया के मुख के विषय में सोचता हो,

परन्तु यदि ऐसा मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

श्लोक ८

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये

न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

भले ही मनुष्य का मन वन में रहने के प्रति, गृहस्थ होने के प्रति आसक्त न हो,
अपनी उपलब्धियों के प्रति, अपने शरीर के प्रति, अमूल्य वस्तुओं के प्रति भी आसक्त न हो,
परन्तु यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

श्लोक ९

गुरोरष्टकं यः पठेत् पुण्यदेही

यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही।

लभेद्वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञम्

गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

जो पुण्यवान व्यक्ति इस गुरोरष्टक का पाठ करता है और
जिसका मन श्रीगुरु की सिखावनियों पर केन्द्रित है—
चाहे संन्यासी हो, राजा हो, विद्यार्थी हो या गृहस्थ—
वह अपने वांछित लक्ष्य [मोक्ष] को प्राप्त करेगा, अर्थात् ब्रह्मपद प्राप्त करेगा।
यदि उसका मन श्रीगुरु के चरणकमलों में अनुरक्त नहीं है
तो क्या, तो क्या, तो क्या, तो क्या?

'गुरोरष्टकम्' भारत के एक सुविख्यात दार्शनिक व सन्त-कवि, आदि शंकराचार्य [लगभग ७८८-८२०] द्वारा संस्कृत में रचित स्तुति है। कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने पूरे भारत का पैदल भ्रमण कर अद्वैत वेदान्तदर्शन का प्रतिपादन किया जिसका यह उपदेश है कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं।

'गुरोरष्टकम्' के श्लोकों में आदि शंकराचार्य कहते हैं कि यदि मनुष्य का मन गुरुभक्ति में लीन न हो तो सौन्दर्य, सम्पत्ति, यश, शास्त्रों की विद्या, पुण्यकर्म और यहाँ तक कि योगसिद्धियाँ होने से भी कोई लाभ नहीं है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।